Dainik Jagran 20-February-2021

बचाव कार्य में बाधा बन रहा जलभराव

चमोली हादसा

जागरण संवाददाता, चमोली : तपोवन विष्णुगाड जल विद्युत परियोजना के एडिट टनल में चल रहे रेस्क्यू में जलभराव के कारण शुक्रवार को भी काम प्रभावित हुआ। एनटीपीसी ने एक और पंप लगाकर दो नलों से आठ इंच पानी की निकासी सुनिश्चित कर दी थी। अब निकासी के लिए छह इंच की एक अन्य लाइन बिछाई जा रही है।

एनटीपीसी की टनल से मलबा हटाने का काम जारी है, लेकिन टनल के अंदर पानी लगातार बढ़ रहा है। टनल में दो पाइपों से आठ इंच पानी की निकासी के बावजूद जलभराव होने पर फिर से छह इंच की अतिरिक्त पाइप लाइन बिछाई जा रही है। जलभराव के चलते शुक्रवार सुबह कुछ देर ही मलबा हटाया जा सका। लगातार पानी भरने से मलबा हटाने में दिक्कत आ रही है। रेस्क्यू में लगे कर्मचारियों का कहना है कि टनल के अंदर मिट्टी में मानव अंग भी दिखाई दे रहे हैं। लेकिन, उन्हें निकालने में सफलता नहीं मिल पा रही है। बताया गया कि दिनभर में सात ट्रक मलबा ही निकाला जा सका।

एक शव बरामद: जिलाधिकारी स्वाति एस भदौरिया ने बताया कि बीती देर शाम एक शव टीएचडीसी हेलंग से बरामद किया गया था। अब बरामद शवों की संख्या 62 हो गई है। इसमें से अभी तक 34 की शिनाख्त हो चुकी है, जबकि 142 लोग लापता है। शुक्रवार को दो मानव अंगों का अंतिम संस्कार भी किया गया।

मृतकों की याद में बनेगा स्मृति वन : ऋषिगंगा की आपदा में जान गंवाने वाले व्यक्तियों की याद में एनटीपीसी स्मृति उद्यान बनाएगी। शुक्रवार को एनटीपीसी के कर्मचारियों और अधिकारियों ने शोक सभा कर मृतकों को श्रद्धांजलि दी गई।

Amar Ujala 20-February-2021

राप्ती नदी पर नेपाल बना रहा पक्का तटबंध, भारत में बाढ़ का खतरा बढ़ा

नदी की धारा मोड़ने की कोशिश कर रहा पड़ोसी देश

विभाकर शुक्ल

श्रावस्ती। नेपाल से निकलने वाली राप्ती नदी को पुनः भारत की ओर मोड़ने के लिए नेपाल नोमेंस लैंड सीमा से लगभग ढाई किमी दूर सोनबरसा पिपरहवा गांव के बीच पक्का तटबंध बना रहा है।

तटबंध बनते ही भारत में राप्ती की बाढ़ से तबाही मचने का अंदेशा जताया जा रहा है। भयभीत ग्रामीणों ने बृहस्पतिवार डीएम को संबोधित एक ज्ञापन एसडीएम जमुनहा को सौंपा। जिसमें ग्रामीणों ने भारतीय क्षेत्र में भी तटबंध बना कर नदी की धारा को डायवर्ट करने की मांग उठाई है।

ग्रामीणों ने डीएम को ज्ञापन देकर भारतीय क्षेत्र में भी तटबंध बनाने की उठाई मांग

राप्ती का उद्गम दक्षिण हिमालय नेपाल राष्ट्र है। यह नदी श्रावस्ती के गणेशपुर गांव के बगल से भारत में प्रवेश करती है। कुछ वर्ष पूर्व नदी रास्ता बदलकर नेपाल की ओर मुड़ गई थी। इसके बाद श्रावस्ती जिले में राप्ती की विभीषिका कम हो गई थी। नदी का पानी नेपाल से आने के बाद कई भागों में वितरित हो जाता था। लेकिन अभी हाल में ही नेपाल ने लगभग ढाई किलोमीटर दूर नेपाल के सोनबरसा से पिपरहवा के बीच एक पक्के तटबंध का निर्माण कर रहा है। इससे पूर्व इस स्थान पर नेपाल के ग्राम विकास समिति ने एक कच्चे तटबंध का निर्माण किया था। यह तटबंध नेपाल के मटहिया गांव तक बनना है। जहां से नोमेंस लैंड की दूरी मात्र एक किलोमीटर ही रह जाती है। ऐसे में माना जा रहा है कि इस तटबंध का निर्माण यदि पूरा हो गया तो राप्ती नदी एक बार फिर डायवर्ट होकर भारत की ओर अपना रुख करेगी। ऐसी स्थिति में बेलरी, गंगाभागड़, गणेशपुर भागड़, रामपुर भागड़, घुमना, घुमनी, बांसगढ़ी, शिवपुर भागड़, दयालनी सहित कई अन्य गांव नदी के मुहाने पर आ जाएंगे।

नेपाल में राप्ती नदी की धारा भारत की तरफ मोड़ने के लिए बनाया जा रहा तटबंध।

डीएम को भेजी रिपोर्ट

नेपाल क्षेत्र में बन रहे पक्के तटबंध के संबंध में सिंचाई खंड एक के एसडीओ विष्णु प्रसाद का कहना है कि इस संबंध में डीएम द्वारा रिपोर्ट मांगी गई थी। जांच करके रिपोर्ट भेजी जा चुकी है। वहीं, एडीएम योगानंद पांडे का कहना है कि इस समस्या के संबंध में उच्च स्तरीय वार्ता होगी। बता दें कि हर साल बाढ़ से अवध के श्रावस्ती, गोंडा, बलरामपुर समेत कई जिलों में खासा नुकसान होता है।

दोनों देशों के बीच नोमेंस लैंड से दो किलोमीटर दूरी पर तटबंध नहीं बनाने की बनी थी सहमति

नेपाल व भारत के बीच राप्ती में आने वाली बाढ़ को लेकर कई बार उच्च स्तरीय बैठकें भी हो चुकी हैं। इन बैठकों में 90 के दशक में समझौता हुआ था कि दोनों देश राप्ती नदी से दो किलोमीटर की परिधि में कोई भी पक्के तटबंध का निर्माण नहीं करेंगे। इसी समझौते के बाद भारत ने उस समय बन रहे कलकलवा संतलिया तटबंध का निर्माण न केवल रोक दिया गया था, बल्कि उसे पक्का करने की योजना भी स्थगित कर दी गई थी। लेकिन नेपाल की ओर से बनाए जाने वाले इस तटबंध का असर दोनों देशों के आम जनजीवन पर पड़ेगा।